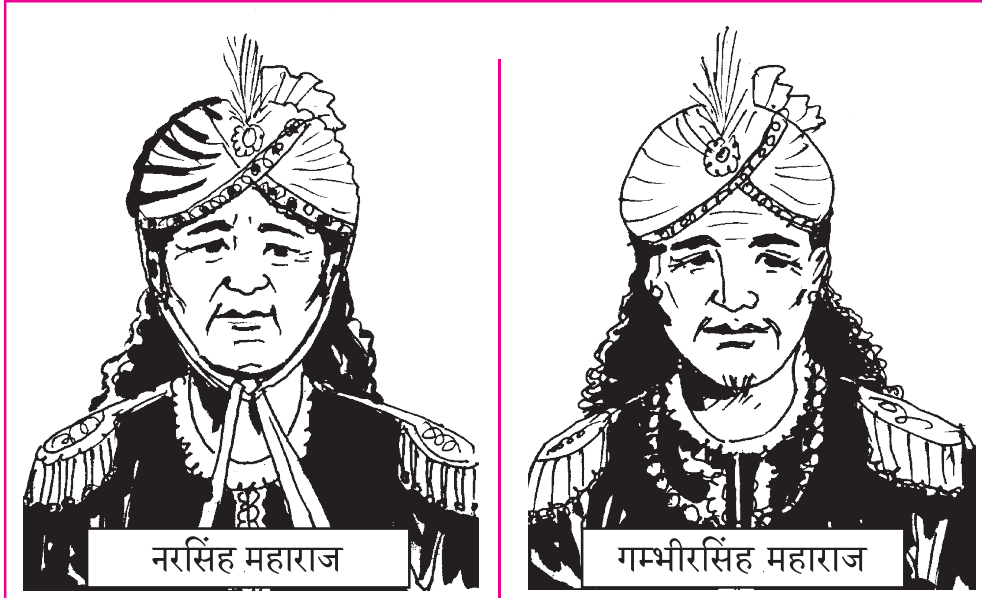




पाठ-चार

दया तथा त्याग की मूर्ति ‘नरसिंह महाराज’

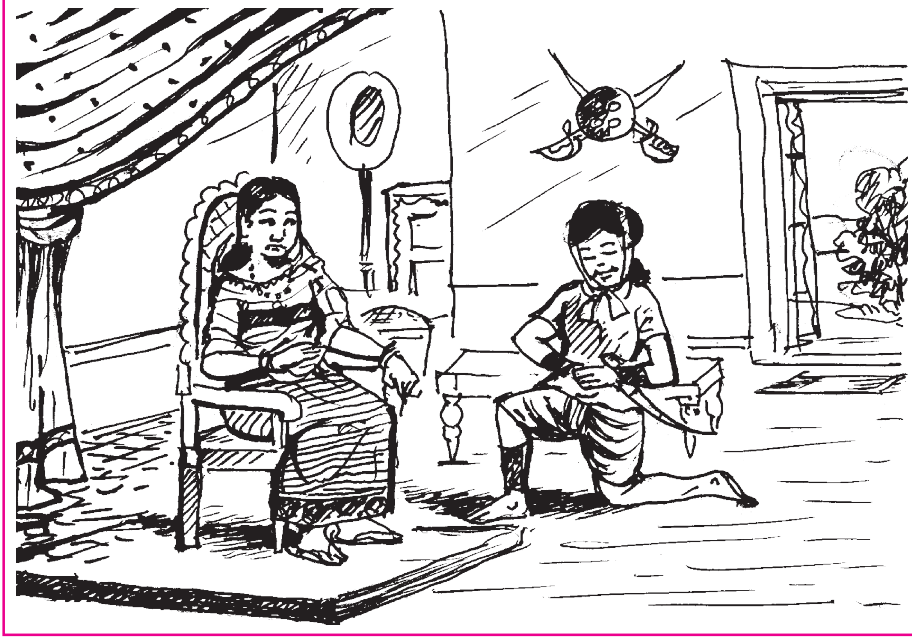


इतिहास साक्षी है कि राज परिवार में तथा राजमहलों में राजसिंहासन की लालच से पुत्र पिता के और भाई भाई के विरुद्ध लड़ाई करते थे। विश्व के इतिहास में ऐसी घटनाओं की कोई कमी नहीं थी। उनके मन में पाप-पुण्य का कोई विचार नहीं था। पुत्र पिता को भाई भाई को मार कर सिंहासन हासिल करने की कोशिश सदा करते रहते थे। लेकिन इसके ठीक विपरीत दया, त्याग और प्रेम से भरा हुआ दिल और आत्मीयता प्रकट कर सकनेवाले कई राजकुमार भी हुए थे। श्री रामचन्द्र ने अपने पिता के वचन-पालन के लिए तथा भीष्म पितामह ने अपने पिता शान्तनु के लिए सिंहासन त्याग दिया। उसी प्रकार

मणिपुर के राजा नरसिंह ने भी अपने सौतेले भाई गम्भीर सिंह के लिए यथासंभव त्याग दिया। सगे भाई नहीं होकर भी वे दोनों इतने प्यार, इतनी श्रद्धा और इतने मेल-मिलाप से रहते थे कि कोई कह नहीं सकता था कि वे सगे भाई नहीं थे।

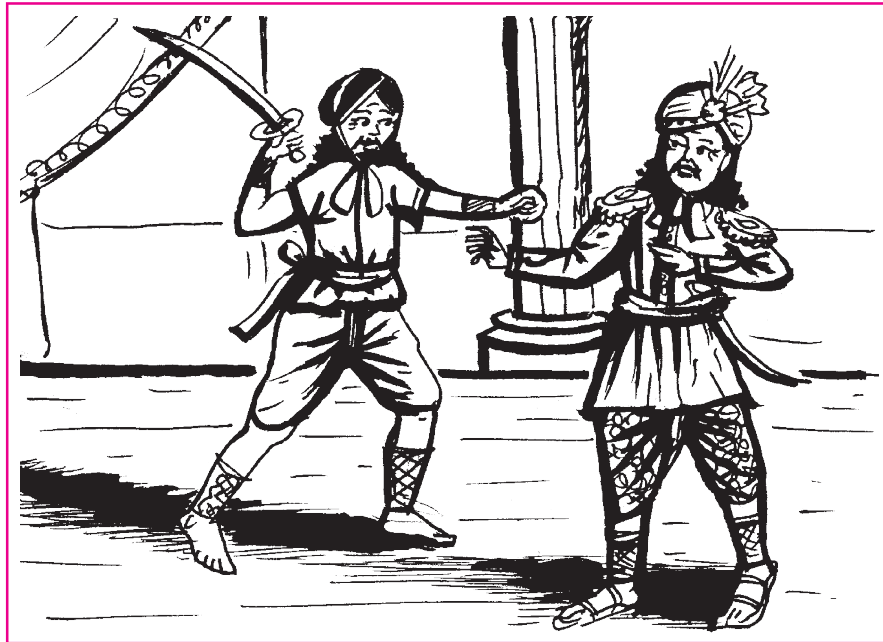
राजर्षि भाग्यचन्द्र महाराज की मृत्यु के बाद सिंहासन को लेकर राज परिवार में एक दूसरे के कान भरने लगे और झगड़े हुए। महाराज चौरजित सिंह के अनुचित और लालची कार्यों से अवा(वर्तमान म्यान्मार) के सैनिकों ने लाभ उठाकर मणिपुर को बहुत ही दयनीय तथा कष्टप्रद दशा में रखा। कई बेकसूर मणिपुरी बाल-बच्चों, स्त्रियों तथा वृद्ध लोगों को मारा गया। मणिपुर अवा के आक्रमण में पराधीन हो गया। सारी प्रजा त्राहि-त्राहि करने लगी। जनरल हिटलर ने सारी यहूदी जनता को तड़पा-तड़पा कर मारा था। उसी प्रकार अवा सैनिकों ने मणिपुर के स्त्री-पुरुष, बाल-बच्चे, आदि को तड़पा कर मारा था। मणिपुर के इतिहास में इस कष्टप्रद कालावधि को “चही तरेत् खुन्ताकपा” कहकर जाना जाता है।

नरसिंह ने गंभीर सिंह की बहुत सहायता की। उसने उन अत्याचारी अवा के सैनिकों को बड़ी कुशलता से कूटनीति द्वारा आत्मसमर्पण कराया। गंभीर सिंह को मणिपुर का राजा बनाया गया। सादगी स्वभाव का पुरुष नरसिंह ने युवराज पद तक लेने की इच्छा नहीं की। उसने मणिपुर के बाहर तथा राज परिवार के अन्दर के कलहों को बड़ी होशियारी से संभाला। सेनापति बन कर उसने अपने बाहु बल से पहाड़ी या घाटी की छोटी-मोटी लड़ाइयों को संभाला। राजा गंभीर सिंह की मृत्यु के बाद अगर वह राजा बनना चाहता तो उस समय उसपर आपत्ति करनेवाला कोई नहीं था। परन्तु वह राजा नहीं बने क्योंकि राजा बनने की इच्छा उनमें नहीं थी। मृत्युशय्या पर पड़े अपने अग्रज गंभीर सिंह द्वारा उनके हाथों सौंपे तीन वर्षीय चन्द्रकीर्ति को राजा बनाना उसकी चाह थी। अतः उन्होंने अपने अनुज देवेन्द्र को सेनापति पद देकर सुख और शांति से शासन करते रहे। उस समय भी राजसिंहासन की लालच में होनेवाले कलहों को उन्होंने अपने वश में रखकर शान्त कराया।



चन्द्रकीर्ति की माता कुमुदिनी भी एक नारी थी। नारी हृदय होने के नाते उन्हें नरसिंह के कार्यों में शंका और ईर्ष्या होने लगी। उसने नरसिंह को कतल कराने का षड्यंत्र रचना शुरू किया। इसकी भनक पाते ही नरसिंह मणिपुर के बाहर चले गए। मणिपुर के बाहर रहकर भी उन्होंने चन्द्रकीर्ति की सुरक्षा के लिए चुपचाप काम किया। कालान्तर में राजद्रोहियों तथा षड्यंत्रकारियों को पकड़ लिया गया, उनको मृत्यु दण्ड नहीं देकर केवल समझा-बुझाकर छोड़ दिया गया। ऐसे ही त्यागी व गुणयुक्त पुरुष थे नरसिंह।

महारानी कुमुदिनी के इशारे से नवीन ने नरसिंह को कतल करने के लिए तलवार से वार किया। नरसिंह तो नहीं मरे, उनकी बाईं भूजा पर मामूली चोट लगी। ऐसे जान लेने की कोशिश किसी अन्य राजकीय व्यक्ति के साथ हुआ होता तो नवीन उस को जीवित नहीं छोड़ता। नरसिंह ने उसे अभयदान देकर मणिपुर के बाहर किसी अन्य स्थान में जाने को कहा। युवराज नर सिंह तथा जनता के भय से राजमाता कुमुदिनी चन्द्रकीर्ति महाराज को लेकर भाग गईं। तब भी नरसिंह ने राजा बनने का विचार नहीं किया। उन्होंने पत्र द्वारा राजमाता को अपने पुत्र के साथ तुरन्त वापस आने की प्रार्थना की।



राज्य में शंका तथा भय की सीमा का अन्त नहीं हुआ। मणिपुर की शासन व्यवस्था बिल्कुल ही बिगड़नेवाली थी कि नरसिंह ने इस अवस्था को सम्भालने के लिए चन्द्रकीर्ति के नाम पर शासन की बागडोर अपने हाथों में ली। सन् 1843 के माघ महीने की 19 वीं तिथि वृहस्पतिवार के सुबह नरसिंह राज सिंहासन पर बैठे। उन्होंने अपने भाई देवेन्द्र को युवराज बनाया। परन्तु परमात्मा की लीला कौन जाने ! यह त्याग तथा दया की मूर्ति नरसिंह वैशाख महीने के ग्यारहवीं तिथि सोमवार को इस पवित्र भूमि को त्याग कर हमेशा के लिए स्वर्गधाम चले गये।

कठिन शब्दों के अर्थ—

हासिल करने की	=	प्राप्त/लब्ध करने की।
आत्मीयता	=	अपनापन, स्नेह संबंध।
कान भरने लगे	=	किसी को किसी के विरुद्ध भड़काने लगे।

तड़पा-तड़पा कर	= अत्यधिक कष्ट पहुँचा कर।
आत्म समर्पण	= अपने आप को सौंप देना, हथियार डाल देना।
सादगी	= सादापन, सरलता, भोलापन।
कलह	= लड़ाई-झगड़ा, युद्ध।
षट्पत्र	= साजिश, दुरभिसंधि।
भनक	= उड़ती खबर, मन्द ध्वनि।
कालांतर	= अपने समय के बाद होनेवाला, अन्य समय, अंतराल, नियत समय के बाद का समय।
इशारे से	= संकेत से।
राजकीय	= राज्य संबंधी, राज्य का।
अभयदान	= भय से रक्षा का वचन देना, शरण देना।
बागडोर	= लगाम में बाँधी जानेवाली रस्सी।

प्रश्न-अभ्यास

1. इतिहास किस बात का साक्षी है ?
2. नरसिंह और गंभीर सिंह दोनों भाइयों के आदर्श गुण क्या-क्या थे ?
3. राजर्षि भाग्यचन्द्र के बाद हुई मणिपुर की अवस्था संक्षेप में लिखिए।
4. नरसिंह ने क्या-क्या त्याग दिए ?

5. क्या राजमाता कुमुदिनी का षडयंत्र सफल हुआ ? नहीं तो, क्यों ?
6. नरसिंह ने मणिपुर के राजा चन्द्रकीर्ति के लिए क्या-क्या किए ?
7. नरसिंह को दया तथा त्याग की मूर्ति क्यों कहा गया ?
8. नरसिंह की दया और त्याग का चित्रण कीजिए।
9. अपने गुरुजनों से पूछकर नरसिंह के अन्य गुण लिखिए और कक्षा में सुनाइए।
10. अपने अध्यापक से पूछकर 'चहि तरेत् खुन्ताकपा' के बारे में दस वाक्य लिखिए।

* * * * *